राम! राम का नाम लेते ही मन श्रद्धा से भर जाता है।

महर्षि वाल्मीकि ने अपने समकालीन शासक राम को, जो अपनी लोकरंजक छवि के रूप में विख्यात ,और श्रुति स्मृति वर्णित गुणों पर खरा उतरने के-कारण, एक महामानव के रूप में प्रस्तुत किया। राम की यह ख्याति कालांतर प्रशंसा, श्रद्धा, और अंत में पूजा में परिवर्तित होती गई।

'श्रद्धा' और 'बौद्धिक तर्क' एक दूसरे के विलोम हैं। 'श्रद्धा' राम के हर अमानवीय कृत्य को , श्रद्धा से ग्रहण करती है ; वहीं 'तर्क', उसे संभाव्य के निकष पर परीक्षण करना चाहता है। श्रद्धा , राम को ईश्वर मानने को प्रेरित करती है, वहीं तर्क, उन्हें ऐतिहासिक पुरुष जो अपने कृत्यों से बने महमानव के रूप में स्वीकारता है। इस तर्क और श्रद्धा की ऊहापोह में तर्क का एक बिन्दु बहुत आकर्षित करता है- 'ईश्वर होने के कारण, 'श्रद्धा के राम' के कृत्यों में कोई महानता नहीं रह जाती। उनके द्वारा प्रस्तुत आदर्श, ईश्वरीय चमत्कार से अधिक नहीं रह जाते। जनसाधारण उन आदर्शों का अनुकरण करना असंभव मान बैठता है। वहीं 'तर्क के राम' ईश्वर न होकर एक महमानव हैं। इसलिए 'उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का अनुकरण, जनसाधारण द्वारा भी संभव है'- यह भावना देश और दुनिया के लिए कल्याणकारी है। हालांकि गांधी ऐसे महापुरुषों ने उन्हें ईश्वर मानते हुए भी, उनके आदर्शों पर चलने का प्रयास किया। फिर भी, जनसाधारण इन कृत्यों को 'दैवी कृत्य' मान कर उन आदर्शों का अनुसरण करने का प्रयास ही नहीं करते।

'श्यामल काया गोरी छाया' के राम मिथक न होकर विशुद्ध ऐतिहासिक हैं। राम और लक्ष्मण को इस रचना में उच्च कोटि का मानव माना है। उनमें किसी प्रकार का देवत्व अथवा ईश्वरीय चमत्कार नहीं है।

'श्यामल काया गोरी छाया' के राम केवल 'राम' हैं।

अतः 'राम' पर पूर्ण श्रद्धा होते हुए भी इस रचना में उन्हें 'लोकरंजक महमानव' के रूप प्रस्तुत करने का प्रयास है।संभव है कि राम की 'लोकरंजक जननायक-' की छवि वर्तमान के जन नायकों को-'लोकरंजक कृत्यों की ओर प्रेरित कर सके।